

RICH DAD POOR DAD

रॉबर्ट कियोसाकी जोकि इस किताब के लेखक है, उनके दो पिता थे. उनके एक पिता जो पढ़े-लिखे, पी.एच.डी होल्डर थे मगर जिंदगी भर गरीब ही रहे और गरीबी में ही मरे. इसलिए रॉबर्ट उन्हें Poor डैड कहते थे. वहीं उनके दुसरे पिता बहुत पढ़े लिखे तो नहीं थे मगर काफी अमीर थे. उन्हें रॉबर्ट Rich डैड बुलाते थे. अब ये सोचने की बात है कि किसी भी इंसान के एक ही वक्त में दो पिता कैसे हो सकते हैं.

उनके गरीब पिता का बस एक ही सपना था कि रॉबर्ट खूब मेहनत से पढ़ाई करने के बाद किसी बड़ी सी कंपनी में नौकरी करके अपना भविष्य सुरक्षित कर ले. मगर रॉबर्ट के दुसरे पिता जो अमीर थे, वे दरअसल रॉबर्ट के दोस्त माइक के पिता थे. वे चाहते थे कि रॉबर्ट अपनी जिंदगी में कुछ चैलेन्ज ले. क्योंकि सारे सबक सिर्फ स्कूल में ही नहीं सीखे जाते. कुछ सबक ऐसे होते हैं जिन्हें इंसान अपनी जिंदगी के तजुर्बो से ही सीखता है. स्कूली पढ़ाई सिर्फ अच्छे ग्रेड्स दिला सकती है मगर जिंदगी की पढ़ाई बहुत कुछ सिखाती है. बेशक पढ़ाई-लिखाई की अपनी अहमियत है मगर सिर्फ इसके भरोसे बैठकर ही सब कुछ हासिल नहीं किया जा सकता.

Lesson 1: अमीर लोग पैसे के लिए काम नहीं करते

एक बार एक आदमी था जिसके पास एक गधा था. जब भी उसे अपने गधे से कुछ मेहनत करवानी होती थी तो वे एक गाजर को उसके सामने लटका देता था. उस गाजर को देखते ही गधा उसे खाने के लालच में काम करता चला जाता था. उसे उम्मीद थी कि एक दिन वो उस गाजर तक पहुँच ही जाएगा. अब ये उस आदमी के लिए तो एक अच्छी तरकीब बन गयी मगर बेचारे गधे को कभी भी वो गाजर नहीं मिल पायी. क्यों? इसलिए कि वो गाजर बस एक छलावा है. बहुत से लोग ठीक उस गधे की तरह ही होते हैं. वे मेहनत पर मेहनत किये चले जाते हैं, इस उम्मीद में कि एक दिन वे अमीर बन जायेंगे. मगर पैसा उनके लिए महज़ एक सपना बन के रह जाता है. इस सपने के पीछे भागने से आप उस तक कभी नहीं पहुँच सकते. तो पैसे के लिए काम करने के बजाये पैसे को अपने लिए काम करने दें.

जब आप अमीर बनना चाहते हैं तो सिर्फ पैसे कमाने के लिए काम ना करें. क्योंकि जैसे ही हम अमीर बनने की राह में कदम बढ़ाते हैं, हमारा डर और लालच हम पर हावी होने लगता है कि कहीं हम गरीब के गरीब ही ना रह जायें. इसी डर से हम और ज्यादा मेहनत करने में जुट जाते हैं. फिर हमारा लालच हम पर हावी होने लगता है. हम उन सारी खूबसूरत चीजों की कल्पना करने लगते हैं जो पैसे से हासिल की जा सकती है. अब यही डर और लालच हमें ऐसे चक्कर में उलझा देता है जो कभी खत्म नहीं होता. तो हम अब और मेहनत करते हैं कि और ज्यादा कमा सकें और फिर हमारा खर्च भी उसी हिसाब से बढ़ने लगता है. इसको ही अमीर डेड "RAT RACE" कहते हैं. अब इसका नतीजा ये हुआ कि हम पैसे कमाने के लिए हद से ज्यादा मेहनत करते हैं, खर्च करते हैं. ये एक जाल है. और आपको लालच और डर का ये जाल अवॉयड करना है. क्योंकि हममें से अधिकतर लोग जो अमीर होना चाहते हैं, इसी जाल का शिकार हो जाते हैं. पैसे के पीछे मत भागिए बल्कि पैसे को अपने पीछे भागने के लिए मजबूर कर दीजिए. आपकी नौकरी लगी है तो काम पर ये सोच कर मत जाईये कि हर महीने आपको एक पे-चेक लेना है. क्योंकि वो पे-चेक आपके सारे बिल्स मुश्किल से ही भर पाता है. ये हर महीने की कहानी बन

जाती है. फिर तंग आकर आप कोई दूसरी नौकरी ढूँढकर और ज्यादा मेहनत करने लगते हैं. लेकिन तब भी आप पैसे के लिए ही काम कर रहे होते हैं. और यही वजह है कि आप कभी अमीर नहीं बन पाते.

सच का सामना कीजिये. आप खुद के लिए जवाबदेह हैं दूसरों के लिए नहीं. तो आपके जो भी सवाल हैं, खुद से पूछिए क्योंकि उनका जवाब सिर्फ आपके ही पास है. क्या आप सिर्फ इसलिए काम कर रहे हैं कि आपकी जिंदगी में सिक्योरिटी रहे? एक ऐसी नौकरी जहाँ से आपको निकाले जाने का कोई डर न हो? या फिर आप सिर्फ दो पैसे कमाने के लिए काम करते हैं? और आपको लगता है कि एक दिन आप इस तरह अमीर हो जायेंगे. क्या बस यही आपको सेटीसफाई करने के लिए काफी है? अगर आपका जवाब हाँ है तो मुझे आपकी सोच पर अफ़सोस है क्योंकि आपने जो अमीर बनने का सपना देखा है वो कभी पूरा नहीं होने वाला. आप हमेशा गरीबी में ही जियेंगे. लेकिन अगर आपका जवाब "ना" है तो आपका पहला कदम ये होगा कि सबसे पहले आप अपने मन से डर हटा दीजिये. क्योंकि ज्यादा पैसा ना कमा पाने का डर और लालच ही आपको बगैर सोचे-समझे काम करने के लिए मजबूर करता है. और हमारा यही कदम हमें नाकामयाबी की तरफ धकेलता है. बेशक हम सब के अन्दर डर और चाहत की भावना होती है लेकिन उन्हें खुद पर इतना हावी ना होने दे कि हम उनके बस में होकर उलटे-सीधे फैसले लेने लग जाएं. बेहतर होगा कि हम जो भी करें पहले उसके बारे में खूब सोच लें. हमेशा दिल से नहीं बल्कि दिमाग से काम लें.

हर सुबह अपने आप से पूछिए क्या आप उतना कर पा रहे हैं जितना कि आपको करना चाहिए? क्या आप अपनी पोटेंशियल का पूरा इस्तेमाल कर पा रहे हैं? आम लोगो की तरह सोचना छोड़ दीजिये जो काम सिर्फ और सिर्फ पैसे के लिए करते हैं. ये सोचना छोड़ दीजिये कि "मेरा बॉस कम पैसा देता है, मुझे ज्यादा मिलना चाहिए, मैं इससे ज्यादा कमा सकता हूँ". याद रखिये, आपकी परेशानियों के लिए सिर्फ आप जिम्मेदार हैं, कोई और नहीं. बॉस आपकी सेलेरी नहीं बढ़ाता तो उसे इल्जाम मत दीजिये, टैक्स को इल्जाम मत दीजिये. जब आप खुद की समस्याओं की जिम्मेदारी लेते हैं तब सिर्फ आप ही उसका हल निकाल सकते हैं. यही वो पहला सबक है जो अमीर डेड ने रॉबर्ट को सिखाया.

इस सबक का एक पार्ट ये भी था कि अमीर डेड ने उन्हें एक कंवीनीयेंस स्टोर में काम पर लगा दिया. उन्हें इस काम के कोई पैसे नहीं मिले. वे बस काम करते रहे. इसका फायदा ये हुआ कि वे अपने दिल से काम में लगे रहे और इस दौरान कई नये आइडिया उनके दिमाग में आते रहे. पैसे को अपने पीछे कैसे भगाया जाए इस बारे में उन्हें कई विचार मिले. उन्होंने देखा कि उस स्टोर की क्लर्क कोमिक्स बुक के फ्रंट पेज को दो हिस्सों में फाड़ देती थी. आधा हिस्सा वो रख लेती और आधा हिस्सा फेंक देती थी. देर शाम स्टोर में एक डिस्ट्रीब्यूटर आया करता था. वो कोमिक्स बुक के उपरी आधे हिस्से को क्रेडिट के लिए लेता और बदले में नयी कोमिक्स बुक्स दे जाया करता. एक दिन उन्होंने उस डिस्ट्रीब्यूटर से पूछा कि क्या वो पुरानी कोमिक्स बुक्स ले सकते हैं. वो इस शर्त पर मान गया कि वे उन कोमिक्स को बेचेंगे नहीं. ये उनके दिमाग में बिजनेस का एक नया आइडिया था. उन्होंने वे पुरानी कोमिक्स बुक्स अपने दोस्तों और बाकी बच्चों को पढ़ने के लिए किराए पर देनी शुरू कर दी. बदले में वे हर किताब का 10 सेंट किराया वसूल करते थे. हर किताब सिर्फ दो घंटे के हिसाब से पढ़ने के लिए दी जाती थी तो असल मायनों में वे उन्हें बेच नहीं रहे थे. उन्हें उस गैराज पर काम भी नहीं करना पड़ा जहाँ से वे कोमिक्स किराए पर देते थे. उन्होंने माइक की बहन को काम पर रखा जिसके लिए उसे हर हफ्ते 1 डॉलर दिया जाता. एक ही हफ्ते में उन्होंने 9.5 डॉलर कमाए. इस तरह उन्होंने सीखा कि पैसे को खुद के लिए काम करने दो ना कि आप पैसे के लिए काम करो.

Lesson 2: फिनेंसियल लीटरेसी क्यों सिखाई जाए ?

1923 में एजवाटर बीच होटल, शिकागो में एक मीटिंग हुई. दुनिया के बहुत से लीडर और बेहद अमीर बिजनेसमेन इस मीटिंग का हिस्सा बने. इनमें से थे एक बहुत बड़ी स्टील कंपनी के मालिक चार्ल्स शवाब और समुअल इंसुल उस वक्त की लार्जस्ट यूटीलिटी प्रेजिडेंट और बाकी कई और बड़े बिजनेसमेन. इस मीटिंग के 25 साल बाद इनमें से कई लोग गरीबी में मरे, कुछ ने खुदकुशी कर ली थी और कईयों ने तो अपना दिमागी संतुलन खो दिया था.

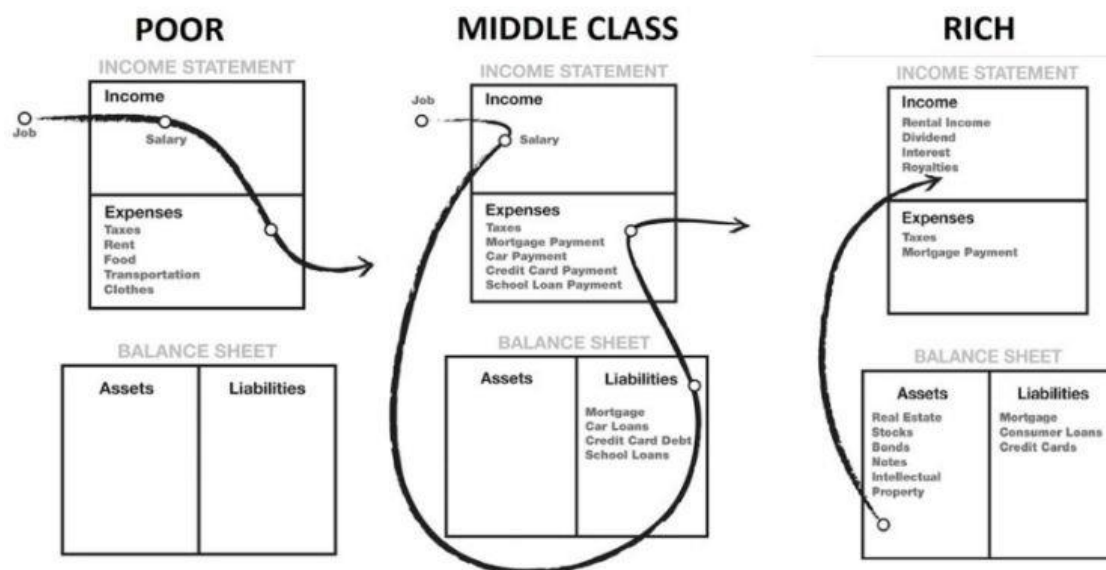
असल बात तो ये है कि लोग पैसे कमाने में इतने मशगूल हो जाते हैं कि वो ये खास बात सीखना भूल जाते हैं कि पैसे को रखा कैसे जाए. आप चाहे जितना मज्जी पैसा कमा ले, उसे बनाये रखना असली बात है. और अगर ये हुनर आपने सीख लिया तो आप किसी भी आड़े-टेड़े हालात का सामना आसानी से कर लेंगे. लॉटरी में मिलियन जीतने वाले लोग कुछ सालों तक तो मजे से जीते हैं मगर फिर वापस उसी पुरानी हालत में पहुँच जाते हैं. अधिकतर लोगों के सवाल होते हैं कि अमीर कैसे बने? या अमीर बनने के लिए क्या करें? इन सवालों के ज़वाब से अधिकतर लोगो को निराशा ही होती है. मगर इसका सही ज़वाब होगा कि पहले आप फिनेंसियली लिटरेट बनना सीखें. देखिये ! अगर आपको एम्पायर स्टेट बिल्डिंग खड़ी करनी है तो सबसे पहले आपको एक गहरा गड्ढा खोदना पड़ेगा, फिर उसके लिए एक मज़बूत नींव रखनी पड़ेगी. लेकिन अगर आपको एक छोटा सा घर बनाना हो तो एक 6 इंची कॉंक्रीट स्लेब डालकर भी आपका काम चल जाएगा. मगर अफ़सोस तो इसी बात का है कि हम में से ज्यादातर लोग 6 इंची स्लेब पर एक एम्पायर स्टेट बिल्डिंग खड़ी करना चाहते हैं. और वे ऐसा करते भी हैं तो ज़ाहिर है कि बिल्डिंग टूटेगी ही टूटेगी.

गरीब डेड रॉबर्ट से बस यही चाहते थे कि वे खूब पढ़ाई करें, लेकिन अमीर डेड उसे फिनेंसियली लिटरेट बनना चाहते थे. ज्यादातर स्कूल सिस्टम बस घर बनाना सिखाते हैं, मज़बूत फाउंडेशन नहीं. स्कूली शिक्षा और पढ़ाई की अपनी अहमियत है मगर असल जिंदगी में ये ही सब कुछ नहीं है.

Rule no. 1: लाएबिलिटीज़ और एस्सेट्स के बीच फर्क समझें और एस्सेट्स खरीदें.

सुनने में बड़ी आसान बात लगती है. लेकिन यही एक रूल है जो आपको अमीर बनाने में मदद करेगा. अक्सर गरीब और मिडल क्लास लोग लाएबिलिटीज़ को एस्सेट समझ लेते हैं. मगर अमीर जानता है कि असल में एस्सेट्स होते क्या हैं और वो वही खरीदता है. अमीर डेड "KISS" प्रिंसिपल में यकीन रखते हैं जिसका मतलब है (KEEP IT SIMPLE STUPID) कीप इट सिंपल, स्टूपिड. उन्होंने लेखक और उसके दोस्त माइक को यही सिंपल बात सिखाई जिसकी बदौलत वे इतनी मज़बूत फाउंडेशन रखने में कामयाब रहे. इस सीख की यही सिंपल बात है की लाएबिलिटीज़ और एस्सेट्स के बीच फर्क समझें और एस्सेट्स खरीदें लेकिन अगर ये इतना ही सिंपल है तो हर आदमी अमीर होता. है ना? मगर यहाँ मामला उल्टा है. ये दरअसल इतना सिंपल है कि हर कोई इस बारे में सोचता तक नहीं है. लोगो को लगता है कि उन्हें लाएबिलिटीज़ और एस्सेट्स के बीच फर्क पता है मगर उन्हें सिर्फ लिटरेसी के बारे में मालूम है फिनेंसियल लिटरेसी के बारे में नहीं.

PDF में कुछ ड्राइंग्स दी गई है जिसकी मदद से अमीर डैड ने एसेट्स और लाएबिलिटीज़ के बीच का फर्क समझाया.



इनकम स्टेटमेंट को "प्रॉफिट और लॉस" का स्टेटमेंट मानकर चलना चाहिए. इसका सिंपल सा मतलब है . इनकम है कि आपके पास कितना पैसा आया और एक्सपेंस है की आपसे कितना पैसा खर्च हुआ. बेलेंस शीट एसेट्स और लाएबिलिटीज़ के बीच बेलेंस बताती है. बहुत से पढ़े-लिखे एकाउंटेंट्स को भी ये पता नहीं होता कि आखिर बेलेंस शीट और इनकम स्टेटमेंट कैसे एक दुसरे से जुड़े है.

अब ये चार्ट देखने में बहुत सिंपल है, इसे आसानी से लोगो को समझाया जा सकता है. एसेट्स वे चीज़े होती है जो आपके लिए पैसे कमाने का काम करती है. मान लो आप कोई घर खरीदकर उसे किराए पर देते है तो उसी किराए से आप वो लोन भी चूका सकते है जो आपने घर खरीदने के लिए लिया था. अब घर भी आपका हुआ और उससे मिलने वाला किराया भी. इसके उलट लाएबिलिटीज़ आपकी जेब से पैसे खर्च करवाती है. जैसे कि घर खरीदकर उसमे रहने से आपको कोई किराया नहीं मिलने वाला. तो अब आप समझ गए होंगे कि अगर अमीर बनना है तो एसेट्स खरीदिए और गरीब ही रहना है तो लाएबिलिटीज़.

अमीर लोगो के पास ज्यादा पैसा इसलिए होता है कि वे इस प्रिंसिपल पर यकीन करते है. वही दूसरी तरफ गरीब लोग इस प्रिंसिपल को ठीक से समझ ही नहीं पाते. इसीलिए इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि सिर्फ लिट्रेट नहीं बल्कि फिनेंशियली लिट्रेट बनिऐ.

सिर्फ नंबर्स से कुछ नहीं होता, फर्क तो तब पड़ता है जब आप अपनी कहानी खुद लिखे. अधिकतर परिवारों में ये देखा गया है कि जो मेहनती होता है उसके पास पैसा भी ज्यादा होता है मगर उसका फायदा क्या जब सारा पैसा लाएबिलिटीज़ में ही खर्च हो जाए.

ये चार्ट दिखाता है कि मिडल क्लास आदमी अपना पैसा किस तरह खर्च करता है. और अगर यही उनका तरीका रहता है तो सारी जिंदगी वे मिडल क्लास ही बनकर रहते है. या क्या पता उससे भी नीचे चले जाए. क्योंकि आप देख सकते है कि उनका सारा पैसा लाएबिलिटीज़ में ही

खर्च हो रहा है. कभी मोर्टेज, कभी रेंट, कार लोन, हाउस लोन, क्रेडिट कार्ड का बिल, फीस और भी ना जाने क्या-क्या. उनकी सारी कमाई इसीमे खर्च हो जाती है.

दूसरी ओर गरीब लोग है जिनकी कोई लाएबिलिटी तो नहीं है मगर उनके कोई एस्सेट्स भी नहीं होते. वे भी पैसा कमाते है, सेलेरी पाते है मगर हर रोज़ के खर्चों में उनका सारा पैसा उड़ जाता है. माना एक गरीब आदमी हज़ार डॉलर कमाता है. उसमे से 300 डॉलर वो अपने छोटे से घर के किराए में खर्चता है, 200 डॉलर उसके आने-जाने का किराया, 200 डॉलर टैक्स और 200 डॉलर खाने और कपड़ों में खर्च हो जाता है. अब उसके पास बचा क्या ? कुछ भी नहीं. और कभी कभी तो उधार लेकर काम चलाना पड़ता है जिससे वो और गरीब हो जाता है.

इसके उलट अमीर एस्सेट्स खरीद कर रखते है. फिर उनके वो एस्सेट्स उन्हें और पैसा कमा कर देते है. उनकी कमाई इसी तरह दो से चार, चार से आठ होती जाती है. अधिकतर अमीर लोग दिमाग से काम लेते है. वे घर लोन पर लेकर उसे किराए पर लगा देते है. बिना मेहनत के हर महीने किराया मिलता है जिससे वे अपना लोन भी चुकता कर लेते है. महीने की लोन की इंस्टालमेंट 1 डॉलर है तो ये अपने घर का 2 डॉलर किराया वसूल करेंगे. 1 डॉलर बैंक को देंगे 1 डॉलर अपनी जेब में. तो हो गया ना ये बिना मेहनत के पैसा कमाना.

तो असल में अमीर डैड और गरीब डैड के बीच बस सोच का फासला है. अपना पैसा कैसे खर्च सिर्फ यही मुद्दे की बात है और कुछ नहीं.

1960 के दिनों में अगर बच्चों से पूछा जाता था कि वे बड़े होकर क्या बनेंगे तो सबके पास यही जवाब होता था कि वे अच्छे ग्रेड्स लायेंगे और डॉक्टर बनेंगे. तब सबको यही लगता था कि अच्छे ग्रेड्स लेकर वे बहुत पैसा कमा सकेंगे. हालांकि उनमें से बहुत बच्चे आज बड़े होकर डॉक्टर बन चुके है. बावजूद इसके उनमें से काफी लोग आज भी फैनैशियेली स्ट्रगल करते नज़र आयेगे. क्योंकि उन्हें हमेशा यही लगा कि ज्यादा पैसा कमाने से उनकी सारी परेशानियां दूर हो जायेंगी. मगर आज के दौर में ऐसा नहीं है. आज बहुत से बच्चे फेमस एथलीट बनना चाहते है या फिर सीईओ, या फिर कोई मूवी स्टार या रॉक स्टार. क्योंकि उन्हें पता है कि सिर्फ अच्छी पढ़ाई और अच्छे ग्रेड्स के भरोसे बैठकर वे करियर में सक्सेस नहीं पा सकते. आजकल फैनैशियेल नाईटमेयर बहुत आम हो गया है. अक्सर नए शादी-शुदा जोड़े ये सोचते है कि उनकी सेलेरी अब डबल हो जायेगी क्योंकि दोनों जने कमा रहे है. एक छोटे से घर में रहते हुए वे अब बड़े घर के सपने देखते है. इसलिए वे पैसा बचाना शुरू कर देते है. इसकी वजह से उनका सारा ध्यान सिर्फ अपना करियर बनाने पर होता है. उनकी कमाई बढ़ने लगती है तो ज़ाहिर है उसी हिसाब से खर्च भी. अब जब आप फैनैशियेली लिटरेट हुए बिना पैसा बनाते है या बिना सोचे समझे उसे खर्च करते है तो होता ये है कि आप पहले से भी ज्यादा खर्च करने लगते है. ये एक ऐसा चक्कर है जो फिर चलता ही रहता है. नए जोड़े ने अब इतना पैसा कमा लिया कि वे एक बड़ा घर खरीद सके. उन्हें तो यही लगेगा कि वे अब थोड़े अमीर हो गए है. मगर असलियत तो ये है कि बड़े घर के साथ उन्होंने नयी लाएबिलिटीज़ भी खरीद ली है. उनके कैश फ्लो में अब प्रॉपर्टी टैक्स का खर्च बड़ गया. अब उन्हें एक नयी गाडी भी चाहिए, फर्नीचर भी, सब कुछ नया. उनकी लाएबिलिटीज़ बड़ती ही चली जा रही है. और ज़्यादातर होता यही है कि इनकम के साथ-साथ खर्च भी बढ़ने लगते है. फिर एक दिन अचानक इस सच्चाई का खुलासा होता है, मगर तब तक हम इस रेट रेस में बुरी तरह फंस चुके होते है.

फिर ऐसे ही लोग हमारे लेखक रोबर्ट के पास आकर पूछते है कि अमीर कैसे बना जाए ? अब यही सवाल तो मुसीबत की जड़ है क्योंकि सबको लगता है कि पैसा ही हर चीज़ का इलाज़ है. ये मानना ही एक बड़ी गलती है. उनकी समस्या ये नहीं है की वे ज्यादा नहीं कमा रहे. बल्कि

ये है कि जो कुछ उनके पास है उसे हेंडल कैसे करे. एक कहावत है जो यहाँ पर लागू होती है " जब तुम खुद को एक गहरे गड्ढे में पाओ तो और खोदना छोड़ दो"

क्यों ज्यादातर लोग पब्लिक स्पीकिंग से घबराते हैं ? मनोचिकित्सको का मानना है कि लोग इसलिए घबराते हैं क्योंकि उन्हें रिजेशन का डर होता है, औरों से अलग होने का भय होता है. लोग हमारे बारे में क्या सोचेंगे या हम पर कहीं हंस ना दे, यही सोच कर अधिकाँश लोग पब्लिक स्पीकिंग से दूर भागते हैं. वे वही करना पसंद करते हैं जो सब कर रहे होते हैं. वे खुद को भीड़ का हिस्सा बनाकर संतुष्ट हो जाते हैं. "आपका घर आपका सबसे बड़ा एसेट है", "लोन लीजिए", अब प्रमोशन हो गया है", अब सेलेरी बढ गयी है तो नया घर लो", यही सब बातें हम लोगो से सुनते रहते हैं. और फिर हम भी उसी रास्ते पर चल पड़ते हैं क्योंकि जो सब कर रहे हैं वो ज़रूर सही होगा. है कि नहीं ? मगर नहीं, ऐसा बिलकुल नहीं है. अमीर डैड ने कहा था कि जापानीज़ लोग तीन चीजों की ताकत जानते थे. तलवार, कीमती जवाहरात और शीशा. तलवार बाजुओं की ताकत का प्रतीक है, कीमती जवाहरात पैसे की ताकत का और शीशा खुद के अंदर छुपी हुई ताकत को दिखाता है. और वही हमारी सबसे बड़ी ताकत है. जब आप खुद को जानते हो, शीशे के सामने अगर आप खुद से सवाल पूछ सकते हो कि मैं सही हूँ या मुझे भी भीड़ का हिस्सा बनकर रहना चाहिए, तो जो जवाब आपको मिलेगा वही आपकी असली ताकत है.

गरीब और मिडल क्लास खुद को पैसे का गुलाम बनने देते हैं इसीलिए वो कभी अमीर नहीं बन पाते.

16 साल के रॉबर्ट और माइक अमीर डैड के साथ हर उस मीटिंग में जाया करते थे जो वे अपने एकाउंटेंट, मेनेजर्स, इन्वेस्टर और एम्प्लॉयियों के साथ रखा करते. यहाँ एक ऐसे अमीर डैड देखने को मिलते हैं जो पढ़े-लिखे नहीं हैं, जिन्होंने 13 साल में ही स्कूल छोड़ दिया था मगर आज वो मीटिंग्स रखते हैं, अपने नीचे काम करने वाले पढ़े-लिखे लोगो को आर्डर देते हैं, उन्हें बिजनेस के टिप्स समझाते हैं. एक ऐसा इंसान जो भीड़ का हिस्सा नहीं बना, जिसने रिस्क लिया और जिसने लोगो की परवाह नहीं की. जिसे ये डर नहीं था कि लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे ? इन मीटिंग्स का नतीजा ये हुआ कि लेखक और उनका दोस्त दोनों ही स्कूली पढ़ाई में मन नहीं लगा पाए. जब भी उनकी टीचर कोई काम देती थी, उन्हें रूल्स के हिसाब से करना होता था. उन्हें एहसास हुआ कि स्कूली पढ़ाई किस तरह से बच्चों की प्रतिभा को निखरने नहीं देती. उनकी क्रियेटिविटी को मार कर उन्हें एक साँचे में ढाल कर इस समाज का एक मशीनी हिस्सा भर बना देती है. और उन्हें टीचर की इस बात से भी इंकार था कि अच्छे ग्रेड्स लाकर ही सक्सेसफुल और अमीर बना जा सकता है. एक दिन रॉबर्ट की अपने गरीब डैड से बहस हो गयी. उनके पिता का मानना था कि उनका घर उनके लिए सबसे बेस्ट इन्वेस्टमेंट है. मगर वो एक RAT RACE में भाग रहे थे. उनकी इनकम और खर्च बराबर ही थे. उन्हें पूरा करने के लिए उनके पास एक पल की भी फुर्सत नहीं थी. यही बात रॉबर्ट उन्हें समझाना चाह रहे थे कि उनके पिता के लिए वो घर एसेट नहीं लाएबिलिटी है. घर पर उनके पैसे खर्च हो रहे थे बदले में मिल कुछ नहीं रहा था. ये बात उनके गरीब डैड समझ नहीं पा रहे थे और यही फर्क था गरीब और अमीर डैड के बीच. खैर, उनकी बहस चलती रही. उन्होंने अपने गरीब पिता को बताया कि अधिकतर लोगो की जिंदगी लोन चुकाने में ही निकल जाती है. जिस घर को वे खरीदते हैं उसके लिए वे 30 साल तक लोन भरते हैं. फिर एक और बड़ा घर लेते हैं और पाना लोन रिन्यू करवाते हैं. अब घर की कीमत भी उसी हिसाब से बढ़ेगी या नहीं ये निर्भर करता है. कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने घर खरीदने के लिए एक बड़ी रकम ली थी. जितनी घर की कीमत नहीं थी उससे ज्यादा कर्ज़ उनके सर पर चढ़ गया. इसका सबसे बड़ा नुकसान लोगो को ये होता है कि वे बाकी जगह इन्वेस्टमेंट नहीं कर पाते क्योंकि उनका सारा पैसा उस घर पर लगा है. उन्हें कभी इन्वेस्टमेंट

करने का मौका ही नहीं मिल पाता और ना ही वे इस बारे में कुछ सीख पाते हैं. और इस तरह कई एस्सेट्स उनके हाथ से निकल जाते हैं. अगर इसके बदले लोग सिर्फ एस्सेट्स पर ध्यान दे तो उनका फ्यूचर कहीं ज्यादा बेहतर हो सकता है.

अब उदाहरण के लिए रॉबर्ट की पत्नी के पेरेंट्स एक बड़े से घर में शिफ्ट हो गए. उनका सोचना था कि अपने लिए बड़ा और नया घर लेना एक सही फैसला है. क्योंकि बाकियों की तरह उन्हें भी घर लेना एक एस्सेट्स लगता था. मगर वे ये जानकर हैरान रह गए कि उस घर का प्रॉपर्टी टैक्स 1000 डॉलर था. ये उनके लिए एक बड़ी कीमत थी. और क्योंकि वे रिटायर हो चुके थे तो इतना पैसा टैक्स के रूप में भरना उनके रिटायरमेंट बजट के बाहर था. बेशक हम ये नहीं कह रहे कि आप एक नया घर ना ले. बल्कि हम समझाना चाहते हैं कि जितने पैसे से आप एक बड़ा घर लेंगे उतने पैसे आप किसी एस्सेट में इन्वेस्ट करे तो बेहतर होगा. आपका एस्सेट आपके लिए कमाई करेगा और कुछ ही समय बाद आपके पास इतना पैसा होगा कि आप आसानी से मनपसंद घर ले पायेंगे वो भी बिना किसी लोन के.

अमीर और ज्यादा अमीर क्यों होते रहते हैं, वहीं मिडल क्लास आगे क्यों नहीं बढ़ पाते, इसके पीछे भी एक वजह है. कारण सीधा है, अमीर एस्सेट खरीदते हैं जो उनका पैसा दुगना करता रहता है. उस पैसे से उनके सारे खर्चे मजे में निपट जाते हैं. और मिडल क्लास क्या करते हैं? वे तो बस महीने की एक तारीख का इंतज़ार करते हैं जब उनकी सेलेरी आये. सारी की सारी सेलेरी तो खर्चों को पूरा करने में खत्म हो जाती है तो इन्वेस्टमेंट कहाँ से होगा. और फिर जब सेलेरी बढ़ती है तो उस पर टैक्स भी बढ़ जाता है और उसी हिसाब से बाकी खर्चे भी. फिर अंत में वही RAT RACE चलती रहती है.

एक कर्ज में डूबा समाज, जहाँ हम रहते हैं:

अपने घर को एस्सेट समझना ही वो वजह है जो हमें कर्ज के बोझ तले दबाती है. आज यही अधिकतर लोगो की सोच है. अगर सेलेरी बढ़ी है तो लोग सोचते हैं कि अब वे बड़ा सा घर ले सकते हैं क्योंकि उन्हें ये अपने पैसे का सही इस्तेमाल लगता है. इसके बदले अगर वही पैसा सही जगह लगाया जाए तो उनकी जिंदगी हमेशा के लिए बदल सकती है. लेकिन ऐसा हो नहीं पाता क्योंकि उनका सारा वक्त हाड़-तोड़ मेहनत करने में चला जाता है. अपनी नौकरी को सेफ ज़ोन समझ कर वे उससे अलग कुछ सोच ही नहीं पाते. और साथ ही उनपर कर्ज का इतना बोझ होता है कि वे नौकरी छोड़ने का रिस्क ले ही नहीं सकते. अब ज़रा खुद से ये सवाल कीजिये कि आज आप नौकरी छोड़ कर बैठ जाते हैं तो कितने दिन आपका गुज़ारा चलेगा? क्योंकि अगर आप फिनेंशियली लिटरेट नहीं हैं, अगर आपने सारी उम्र सिर्फ सेलेरी के भरोसे ही काटी है, और एस्सेट्स के बदले आपने लाइबिलिटीज़ ली हैं तो यकीनन आपकी जिंदगी एक कड़ी चुनौती है.

सिर्फ नेट वर्थ के भरोसे आपका काम नहीं चल सकता. नेट वर्थ बताता है कि आपके पास वाकई में कितना पैसा है चाहे वो एक गैराज में पड़ी पुरानी कार के रूप में ही क्यों ना हो. अब भले ही वो कार कुछ काम की नहीं हो. जबकि वेल्थ का मतलब है कि आपके पास जो पैसा है उससे आप कितना और पैसा कमा रहे हैं. जैसे कि मान लीजिये आपके पास कोई एस्सेट है जिससे हर महीने मुझे 3000 डॉलर की कमाई हो जाती है, और हर महीने आपके 6000 डॉलर खर्चे हैं तो मैं सिर्फ आधे महीने ही अपना गुज़ारा कर पाऊंगा. तो सोल्यूशन ये होगा कि अपने एस्सेट्स से मिलने वाला पैसा बढ़ा दें. जब वो 6000 डॉलर मिलने लगेगा तो आप रातों रात अमीर नहीं हो जायेंगे मगर इस तरह आप वेल्थी होने लगेंगे. अब अगर आप अचानक नौकरी छोड़ते भी

है तो आपके एस्सेट्स सारा खर्च कवर कर लेंगे. आप वेल्थी तभी बन पायेंगे जब आपके खर्च आपके एस्सेट्स की ग्रोथ से कम रहे.

LESSION 3: अपने काम से काम रखे

दुनिया की सबसे बड़ी फूड चेन मैक डोनाल्ड के फाउंडर रे क्रोक ने एक एमबीए क्लास में एक स्पीच दी. ये 1947 की बात है. उनकी ये स्पीच बड़ी ही शानदार थी, लोगो को प्रेरित करने वाली. स्पीच के बाद जब एमबीए क्लास के छात्रो ने कुछ वक्त उनके साथ बिताने की गुजारिश की तो वे उनके साथ बियर पीने चले गए. बातों-बातों में रे ने अचानक एक सवाल किया "क्या आप लोग जानते है कि मै किस बिजनेस में हूँ?" अब ये बात तो सबको मालूम थी कि वे हेमबर्गर बेचते थे. इस बात पर वे हँसने लगे और बोले कि उनका असल बिजनेस तो रियल एस्टेट है. क्योंकि मैक डोनाल्ड के लिए हर लोकेशन का चुनाव सोच समझकर किया जाता है. जहाँ उसकी फ्रेंचाईजी बनाई जाती है, वो जमीन भी साथ ही बेची जाती है. तो इसका सीधा मतलब है कि मैक डोनाल्ड की फ्रेंचाईजी खरीदने वाले को वो जमीन भी खरीदनी पड़ती थी. तो इस तरह से ये एक रियल एस्टेट बिजनेस भी हुआ.

यही सबक अमीर डैड ने रॉबर्ट को सिखाया कि अक्सर लोग खुद के लिए छोड़कर बाकी सबके लिए काम करते है. वे टैक्स पे करके गवर्मेंट के लिए काम करते है, उस कम्पनी के लिए काम करते है जहाँ वे नौकरी करते है, बैंक का मॉर्टेज देकर उसके लिए काम करते है. और ये सब इसलिए क्योंकि हमारा एजुकेशन सिस्टम ही ऐसा है. स्कूल हमें एम्प्लोयी बनना सिखाता है नाकि एम्प्लायर. जो आप पढ़ते है वही आप बनते है. अगर आपने साइंस पढ़ी तो डॉक्टर. मेथमेटिक्स पढ़ी तो इंजीनियर, मतलब जो आपने पढ़ा वो आप बने. अब मुसीबत तो ये है कि इससे छात्रो का कोई भला नहीं हो पाता क्योंकि वे नौकरी और बिजनेस के बीच के फर्क में उलझ कर रह जाते है. जब कोई पूछता है कि आपका क्या बिजनेस है तो आपको ये नहीं बोलना चाहिये कि, मै तो एक डॉक्टर हूँ या एक बैंकर हूँ, क्योंकि वो आपका प्रोफेशन है, बिजनेस नहीं. कहने का मतलब है कि आप जो करते है उसे अपना बिजनेस बनाईये, नौकरी नहीं. अपनी सारी उम्र दुसरो के लिए काम करके उन्हें अमीर करने में बर्बाद ना करे बल्कि खुद की जिंदगी को खुशहाल बनाने के लिए काम करे.

बहुत से लोगो को इस बात का एहसास बड़ी देर से होता है कि उनका हाउस Loan उनकी जान ले रहा है. और फिर उन्हें लगता है कि जिसे वे एस्सेट मानने की गलती कर रहे थे दरअसल कभी एस्सेट था ही नहीं. जैसे उन्होंने कार ली, तो उससे जुड़े तमाम खर्च उनकी लाएबिलिटीज़ बन गए. उन्हें पूरा करने के लिए नौकरी ज़रूरी है और अगर कभी वो सेफ जॉब उनके हाथो से निकल गई तो उनकी मुसीबत शुरू हो जाती है. इसीलिए तो हम एस्सेट कॉलम पर इतना जोर दे रहे है ना कि आपकी इनकम कॉलम पर. और फिनेंशियली सिक्योर होने का यही एक तरीका है.

आप कितने अमीर है, ये जानने का सही तरीका नेट वर्थ इसलिए नहीं है क्योंकि जब भी आप अपने एस्सेट्स बेचते है तो उनपर भी टैक्स लगता है. आपको उतना पैसा नहीं मिलता जितना कि आप सोचते है. आपके बेलेंस शीट के हिसाब से आपको जितना भी पैसा मिलेगा उस पर भी आपको टैक्स देना पड़ेगा.

जो आप कर रहे है उसे एकदम मत छोड़िये. ये किताब आपको कभी भी ये सलाह नहीं देगी. अपनी नौकरी करते रहिये पर साथ ही एस्सेट्स भी जमा कीजिये. और एस्सेट्स से मेरा मतलब है

सही और असली मायने में एस्सेट्स. मैं ये नहीं कहूँगा कि आप कोई कार लीजिये क्योंकि वे मेरी नज़र में एस्सेट नहीं है क्योंकि जैसे ही आप उसे चलाना शुरू करते हैं वो अपनी कीमत का 25% खो देती है. जितना हो सके खर्च में कटौती करें और लाएबिलिटीज़ घटाएं.

अब किस तरह के एस्सेट्स खरीदे जाने चाहिए ? यहाँ हम आपको कुछ उदाहरण देते हैं:

- ऐसा बिजनेस जहाँ आपकी मौजूदगी ज़रूरी ना हो, जो दूसरे लोग आपके लिए चलाएँ.. क्योंकि आप वहाँ ज्यादा वक्त देंगे तो वो बिजनेस नहीं नौकरी होगी.
- रियल एस्टेट में पैसा लगाये
- स्टोक और बांड खरीदे

जब एस्सेट खरीदे तो अपनी पसंद की चीज़ों पर पैसा लगाएँ. क्योंकि आपका मन होगा तभी आप उसमें ध्यान दे पायेंगे. अगर उसमें आपकी रुचि होगी तो आप उसे बेहतर समझ पायेंगे. रॉबर्ट को रियल एस्टेट और स्टोक्स में रुचि थी खासकर छोटी कंपनियों में इन्वेस्ट करना. अपने अमीर डैड की सलाह पर उसने अपनी नौकरी कभी नहीं छोड़ी. वो जॉब करता रहा साथ ही अपने एस्सेट कॉलम को बढ़ा और मज़बूत बनाता चला गया. एक पैसा भी जो आप कमाते हैं उसे बेकार ना जाने दें. अपने पैसे को अपना गुलाम मान कर चलिए जो आपके लिए काम करें. आप लक्ज़री खरीदना चाहते हैं ? शौक से खरीदे, कोई बड़ी बात नहीं. मगर ये ना भूलें कि अमीर और मिडल क्लास में यही सोच का फर्क है. जहाँ मिडल क्लास पैसा आते ही पहले लक्ज़री में खर्च करेगा वहीं अमीर आदमी उसे अंत में खरीदेगा. इतना समझ लेने के बाद अब अगले चेंप्टर में आप अमीर लोगो के सबसे बड़े सीक्रेट के बारे में जानेंगे.

LESSION 4: अमीर पैसा इन्वेस्ट करते हैं:

अलेक्जेंडर ग्रेहम बेल ने टेलीफोन इन्वेस्ट करने के बाद उसे पेटेंट कर दिया था. इनका बिजनेस बढ़ा और सँभालने में मुश्किल होने लगी तो वे वेस्टर्न यूनियन गए और उन्हें अपना पेटेंट और छोटी सी कंपनी 100,000 डॉलर में बेचने की पेशकश की. उस वक्त के वेस्टर्न यूनियन के प्रेजिडेंट ने पेशकश ठुकरा दी. उन्हें ये दाम कुछ ज्यादा लग रहे थे. और फिर उसके बाद एक बड़ी कम्पनी AT&T का जन्म हुआ. रॉबर्ट 1984 से प्रोफेशनल तौर पर पढ़ा रहे हैं. एक चीज़ जो हजारो लोगो को पढ़ाने के बाद उन्होंने जानी वो ये कि उन सब लोगो में पोर्टेशियल था. बल्कि हर एक इन्सान में पोर्टेशियल है जो हमें महान बना सकती है. इसके बावजूद जो हमें रोकता है वो है, खुद पर डाउट रखना. स्कूल छोड़ने के बाद हमें पता चलता है कि जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए सिर्फ ग्रेड्स ही काफी नहीं होते. जैसे सिर्फ स्मार्ट लोग ही आगे नहीं बढ़ते बल्कि वे बढ़ते हैं जो बोल्ड भी होते हैं. ये सच है कि फ़ैनेशियल जीनियस होने के लिए इसकी नोलेज भी होनी चाहिए मगर साथ ही हिम्मत और बोल्डनेस भी चाहिए. ज्यादातर लोग पैसे के मामले में कोई रिस्क नहीं लेना चाहते मगर अमीर होने के लिए आपको रिस्क लेने ही पड़ेंगे. क्योंकि हो सकता है आने वाले सालों में एक नया बिल गेट्स पैदा हो या अगला एलेक्जेंडर ग्राहम बेल और बाकी शायद दिवालिया बनकर गरीब हो जाए. अब ये आपकी मर्ज़ी है, आप इनमें से क्या बनना चाहते हैं. अगर आप अपना फ़िनेशियल आई क्यू बढ़ाते हैं तो बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं. और अगर नहीं तो आने वाले साल और भी डरावने हो सकते हैं क्योंकि हर पुराना जाता है तो नया आता है. तो जो आज है वही सबसे खुशहाल वक्त है. आज के दौर में लोग ज्यादा फ़िनेशियली स्ट्रगल कर रहे हैं क्योंकि उनकी सोच अभी भी पुरानी है. फिर वे अपनी गलती ना मानकर या तो अपने बॉस को इल्जाम देंगे या नई टेक्नोलोजी को. जो कभी कल के दौर में एस्सेट था वही आज लाएबिलिटी बन चुका है. तो आपको अपडेट रहने की ज़रूरत है. रॉबर्ट ने

एक गेम डीजाइन किया है जिसे वे "कैश फ्लो" कहते हैं. ये लोगो को सिखाता है कि पैसा कैसे काम करता है ? अमीर बनने की राह क्या है और रेट रेस से बाहर कैसे निकले ? ये सारी चीज़ें इस गेम से समझाने की कोशिश की गयी. एक दिन एक औरत आई. गेम खेलने के दौरान उसने एक बोट कार्ड जीता जिसका मतलब था कि उसने उस गेम में एक बोट जीती. वो औरत बड़ी खुश हुई मगर जब उसे पता चला कि बोट लेने के लिए उसे एक बड़ी रकम टैक्स भरनी होगी तो उसकी खुशी गायब हो गयी. वो बोट उसके लिए अब एस्सेट नहीं बल्कि लाएबिलिटी बन गई. उसे अब पता चला कि ऐसे तो ये बोट उसकी जान ही ले लेगी. उसे ये आइडिया समझ नहीं आया और रिफंड की मांग की. उसे उसके पैसे वापस मिल गए और वो चली गई. मगर बाद में उसने फ़ोन करके बताया कि उसे अब गेम का आइडिया कुछ समझ आने लगा था. वो उस गेम से अपनी लाइफ को जोड़ कर देख पा रही थी. पैसा कैसे काम करता है इस बात को समझ ना पाने की वजह से उसका गुस्सा जायज था. हम भी अक्सर यही करते हैं. जो बात हमारी समझ से परे होती है, उस पर हमें गुस्सा आता है और हम जिंदगी की हर परेशानी के लिए उसे ब्लेम करना शुरू कर देते हैं. मगर अगर ठंडे दिमाग से सोचे तो ये तरीका एकदम गलत होगा. बेहतर होगा कि हम उन्हें समझने की कोशिश करें तो गेम ऑफ़ लाइफ जीत सकते हैं.

बहुत से लोग कैश फ्लो गेम में खूब पैसा जीतते हैं. फिर उन्हें समझ नहीं आता कि उस पैसे का क्या करें तो वे हारने लगते हैं. इसकी वजह है उनकी पुरानी सोच जो आगे नहीं बढ़ने देती. और फिर वे बाद में सारा पैसा ही हार बैठते हैं. कुछ लोग कहते हैं कि वे हार गए क्योंकि उनके पास सही पत्ते नहीं थे. बहुत से लोग इसी तरह जिंदगी में सही मौका की तलाश में बैठे रहते हैं. कुछ लोगो तो सही मौका मिलता भी है तो उसका फायदा नहीं उठा पाते क्योंकि वे कहेंगे कि उनके पास पैसा ही नहीं था. अब कुछ ऐसे भी होते हैं जिन्हें पैसा और मौका दोनों मिले फिर भी वे कुछ हासिल नहीं कर पाए क्योंकि दरअसल वे समझ ही नहीं पाए कि ये एक अपोरच्युनिटी है. फिनेंशियल इंटेलीजेंस का मतलब है कि आप पैसे को लेकर कितने क्रिएटिव हो सकते हैं अगर आपको मौका मिलता है तो बगैर पैसे के आप क्या करेंगे, और अगर पैसा है मगर मौका नहीं तो उस सूरत में आप क्या करेंगे, ये सब आपकी फिनेंशियल इंटेलीजेंस पर निर्भर करता है. ज्यादातर लोग इस बात का एक ही सोल्यूशन जानते हैं कि खूब मेहनत करके खूब पैसा कमाया जाए. लेकिन आपको सीखना है कि अपने लिए मौका कैसे पैदा किया जाए ना कि उसके इंतज़ार में बैठे रहे. सबसे खास बात अमीरों की जो है वे ये कि उन्हें पता है पैसा असल चीज़ नहीं है, असल चीज़ है इसका सही मतलब जानना. ये जान लेना कि जो हमें चाहिए वो हम इससे बना सकते हैं. हमारा दिमाग हमारे लिए सबसे बड़ा एस्सेट होता है. यही हमें सुपर रिच बना सकता है या सुपर पुअर निर्भर करता है कि हम कैसे इसका इस्तेमाल करें. जो लोग सफल हैं उनके साथ कदम मिलाकर चलना है तो आपको ये सीखना पड़ेगा कि पैसा बढ़ाने करने की चाहत खुद में कैसे पैदा करें. आपको अपने सबसे बड़े एस्सेट यानि आपके दिमाग को इन्वेस्ट करने की ज़रूरत है. आपको फिनेंशियली इंटेलीजेंट होना पड़ेगा. आइये इसका एक उदाहरण समझें. 1990 के दशक में एरिज़ोना और फोनिक्स के आर्थिक हालात बुरे चल रहे थे. वहां के लोगो को हर महीने 100 डॉलर बचाने की सलाह दी जा रही थी. बुरे वक्त के लिए पैसा बचाने का विचार कुछ हद तक सही भी है. मगर उस पैसे का क्या फायदा जो आप जमा करते जाते हैं. इससे तो अच्छा है उसका कुछ हिस्सा इन्वेस्ट किया जाए जो आगे चलकर आपको फायदा दे. खैर, बात करते हैं एरिज़ोना और फोनिक्स के लोगो की जो आर्थिक तंगी झेल रहे थे. ऐसे में इन्वेस्टर को ये एक बढ़िया मौका लगा. लोग जो अपनी प्रॉपर्टी अपने-पौने दामो में बेच रहे थे वो कई इन्वेस्टर्स ने हाथो हाथ खरीद ली.

रॉबर्ट ने भी 75,000 डॉलर की कीमत वाला एक घर सिर्फ 20,000 डॉलर में खरीद लिया. इसके बाद उन्होंने अटॉर्नी के ऑफिस में एक एड दिया. 75,000 डॉलर वाला घर सिर्फ 60,000 डॉलर में लेने के लिए ग्राहकों टूट पड़े. रॉबर्ट का फ़ोन बजना बंद ही नहीं हो रहा था. ये पैसा उनको उस एस्सेट से मिलने जा रहा था जो उन्होंने प्रोमिसरी नोट के रूप में ग्राहक से लिया था. और उन्हें ये पैसा कमाने में केवल 5 घंटे लगे. उन्होंने जो 40,000 रूपये इन्वेस्ट किये वो उनके कॉलम ऑफ़ एस्सेट में क्रियेट हुए थे. और बगैर टैक्स के उन्होंने अचानक ही मिले एक मौके का फायदा उठाकर ये पैसे क्रियेट अपने इनकम कॉलम में एड कर लिए.

कुछ सालो बाद ही उनके इस बिजनेस ने इतना पैसा क्रियेट किया कि उनकी कम्पनी की कार, गेस, इंश्योरेंस, क्लाइट्स के साथ डिनर, ट्रिप और बाकी चीज़े सब कवर हो गयी. जब तक गवर्नमेंट उन खर्चों पर टैक्स लगाती, इनमे से ज़्यादातर चीज़े प्री टैक्स एक्स्पेंसेस में खर्च हो चुकी थी. कुछ सालो बाद ही जो घर 60,000 डॉलर में बिका था अब वो 110,000 डॉलर का था अभी भी उनके पास कुछ मौके थे मगर वे इतने कम थे कि उनके लिए रॉबर्ट को एक वैल्युएबल एस्सेट लगाना पड़ता और अपना वक्त भी. . . . तो वे आगे बढ़ गए. उन्हें अब नये मौकों की तलाश करनी थी. अब आप एक सवाल खुद से कीजिये. मेहनत करना भी बहुत मेहनत का काम है. 50% टैक्स भरिये और बाकी बचाइये. अब वो सेविंग्स आपको 5% इंटरैस्ट देंगी और फिर उस पर भी आप और टैक्स भरे ? इससे तो अच्छा होगा कि अपना पैसा और टाइम अपने सबसे पावरफुल एस्सेट यानी अपने दिमाग पर इन्वेस्ट करे और फिनेंशियली इंटेलीजेंट बने.

ये दुनिया कभी एक सी नहीं रहती. जो आज है कल नहीं होगा. कभी मंदी तो कभी तेज़ी का दौर चलता रहेगा. वक्त के साथ टेक्नोलोजी और बेहतर होती जाएगी. आज मार्केट ऊपर है तो कल नीचे होगा खासकर स्टोक मार्केट तो हर रोज़ बदलता है मगर इससे आपको क्या फर्क पड़ेगा अगर आप फिनेंशियल इंटेलिजेंट है तो ? क्योंकि आप तो हर हालात के लिए तैयार रहेंगे. आपको जिंदगी में बेशुमार मौके मिलेंगे जहाँ आप अपनी फिनेंशियल इंटेलिजेंट का फायदा उठा सकते है, ज़रूरत है तो बस उन मौकों को लपकने की.

अमूमन हम दो तरह इन्वेस्टर देख सकते है. पहले वो जो पैकेज इन्वेस्टमेंट खरीदते है. और ये काफी आसान और बगैर झंझट का काम है. दुसरे इन्वेस्टर अपने लिए खुद ही इन्वेस्टमेंट क्रियेट करते है. इनको आप प्रोफेशनल भी कह सकते है. जितना ये इन्वेस्ट करते है उससे कई गुना ज्यादा पैसा बना लेते है. अब अगर आप इस तरह के इन्वेस्टर बनना चाहते है तो आपको खासतौर पर इन तीन स्किल्स को समझने की ज़रूरत है:

1. ऐसी अपोर्च्युनिटी ढूँढिए जो बाकी न ढूँढ सके हो:

याद रहे आपकी दिमाग वो देख सकता है जो बाकियों की आँखे भी न देख पाए

2. पैसा बढ़ाइये:

जब पैसे की ज़रूरत पड़े, मिडल क्लास केवल बैंक जाता है मगर दुसरे टाइप के इन्वेस्टर पैसा बढ़ा कर केपिटल रेज करते है. उन्हें हमेशा बैंक की ज़रूरत नहीं पड़ती.

3. स्मार्ट लोगो को ओर्गेनाइज़ कीजिये:

इंटेलीजेंट लोग वे होते है जो अपने से ज्यादा स्मार्ट लोगो के साथ मिलकर काम करते है इसलिए इन्वेस्ट करने से पहले अपने इन्वेस्टमेंट एडवाइज़र को चुने.

मुझे मालूम है कि ये सब आपके लिए कुछ ज्यादा है मगर इसके रिवाइस शानदार है. जिंदगी में रिस्क बहुत है लेकिन उन्हें हैंडल करना सीख कर ही आप अमीर बन पायेंगे.

LESSION 5: सीखने के लिए काम करे, पैसे के लिए नहीं

एक बार एक जर्नलिस्ट ने रॉबर्ट का इंटरव्यू लिया था. रॉबर्ट उसके आर्टिकल पहले भी पढ़ चुके थे और उस जर्नलिस्ट के लिखने की स्टाइल से बेहद प्रभावित थे. इंटरव्यू जब पूरा हुआ तो उस जर्नलिस्ट ने रॉबर्ट को बताया कि वो एक मशहूर लेखिका बनकर उनकी ही तरह एक दिन फेमस होना चाहती है. रॉबर्ट ने उससे पुछा "तो ऐसा क्या है जो उन्हें मशहूर होने से रोक रहा है" इस सवाल के ज़वाब में उस जर्नलिस्ट ने कहा "उनकी जॉब आगे नहीं बढ़ पा रही". इस पर रॉबर्ट ने सुझाव दिया कि उस जर्नलिस्ट को कोई सेल्स क्लास ज्वाइन कर लेनी चाहिए. जर्नलिस्ट ने बताया कि उनकी एक दोस्त उन्हें पहले ही ये ऑफर दे चुकी है मगर उन्हें ये छोटा काम लगता है. वे ये भूल गयी थी कि रॉबर्ट खुद कभी सेल्स स्कूल जा चुके थे.

इस बात का पॉइंट ये है कि अगर आपके पास कोई टेलेंट है जिसके दम पर आप कुछ पैसा कमाना चाहते हैं तो आपका टेलेंट काफी नहीं होगा क्योंकि उस टेलेंट को कैसे भुनाया जाए जब तक आप ये बात नहीं जानते आपका टेलेंट यूँ ही बेकार है. जब तक आप उसे लोगों के सामने पेश करने का हुनर नहीं सीख जाते, आप कुछ नहीं कमा सकते. तो बेचने की कला सीखने में कोई शर्म की बात नहीं है. किसी भी सेल्समेन को इसके लिए शर्मिदा नहीं होना चाहिए.

एक जो सबसे बड़ा फर्क अमीर डैड और गरीब डैड के बीच था वो ये कि गरीब डैड हमेशा नौकरी की चिंता करते थे कि जॉब हमेशा सिक्योर रहे. क्योंकि एक सेफ जॉब ही उनके लिए सब कुछ थी. जबकि अमीर डैड हमेशा सिर्फ और सिर्फ कुछ सीखने पर जोर देते थे. अमीर बनने के लिए आपको बहुत कुछ सीखना पड़ेगा. इसके अलग पहलु को देखे तो स्कूल हमें रिवाइड करते हैं किसी एक ही ख़ास चीज़ में महारत के लिए. इसका एक उदाहरण देखिये. जब डॉक्टर मास्टर की डिग्री लेते हैं उसके बाद किसी एक स्पेशल फ़ील्ड में डॉक्टरेट करते हैं जैसे कि पीडियाट्रिक या कुछ और. मतलब एक छोटे से विषय पर उन्हें बहुत पढ़ना पड़ता है उस फ़ील्ड में महारत के लिए. और यही उनका रिवाइड होता है. ऐसे ही बहुत कुछ जानने के लिए जो थोड़ा बहुत आप सीखते हैं वो नॉलेज तभी आएगी जब आप अलग-अलग कंपनियों के लिए काम करेंगे, दुनिया की अलग-अलग चीज़ों को जानेगे, चीज़ें कैसे काम करती हैं ये सभी बातें अनुभव करेंगे तभी आपकी नॉलेज बढ़ेगी. शायद यही वजह थी कि अमीर डैड छोटे रॉबर्ट और माइक को अपने साथ लेकर जाते थे जब वे अपने डॉक्टर, एकाउंटेंट्स, लॉयर या किसी प्रोफेशनल से मिलने जाते. जब रॉबर्ट ने मेरिन कोर्स ज्वाइन करने के लिए अपनी हाई पेईंग जॉब छोड़ी तो उसके गरीब मगर पढ़े-लिखे पिता समझ नहीं पा रहे थे कि आखिर रॉबर्ट ने ऐसी शानदार नौकरी क्यों छोड़ी. वे एक तरह से इस फैसले से सख्त निराश हुए. रॉबर्ट ने उन्हें समझाने की हरमुमकिन कोशिश की कि उनका ऐसा करना क्यों ज़रूरी था मगर उन्हें ये बात हज़म नहीं हो रही थी. रॉबर्ट ने उन्हें कहा कि वे सीखना चाहते हैं कि खुले आसमान में कैसे उड़ें. उन्हें जानना था कि वर्कर्स की टीम को कैसे हैंडल किया जाए, किसी भी कम्पनी को अपने बलबूते पर चलाना कितना मुश्किल काम है, रॉबर्ट ये सब सीखना चाहते थे. वियतनाम से लौटने के बाद रॉबर्ट ने अपनी जॉब से रिजाइन कर दिया और Xerox कोर्स को ज्वाइन कर लिया. उन्हें ये नौकरी किसी फायदे के लिए नहीं चाहिए थी. वो इतने शर्मिले थे कि किसी को कुछ भी बेचने के ख़याल से ही उन्हें पसीना आ जाता. अपनी इसी कमी को दूर करने के लिए उन्होंने Xerox के सेल्स ट्रेनिंग प्रोग्राम की शिक्षा ली. इसके बाद रॉबर्ट ने खुद अपनी कंपनी की शुरुवात की और अपना पहला शिपमेंट भेजा. वे अगर इसमें नाकामयाब रहते तो पक्का दिवालिया हो जाते. लेकिन उन्होंने ये रिस्क लिया और अपने अमीर डैड की सीख को याद रखा कि बेशक आप 30 की उम्र से पहले दिवालिया होने का रिस्क ले सकते हो क्योंकि इस उम्र में आपको रिकवर होने का मौका भी मिल जाता है.

ज्यादातर एम्प्लोयी अपने वर्कर्स को इतना तो पे करते हैं कि वे काम छोड़ कर ना जाए और ज्यादातर वर्कर भी जी फाड़ कर इसलिए मेहनत करते हैं कि वे काम से निकाले ना जाए. इसलिए तो उन्हें सिर्फ अपनी सेलेरी और कंपनी से मिलने वाले फायदों से ही मतलब होता है. इस सोच के साथ उनके कुछ साल तो बढ़िया गुज़रते हैं मगर ये लम्बे समय तक काम नहीं करता. तो क्यों ना आप वो सब कुछ अभी सीखें जो आप सीखना चाहते हैं इससे पहले कि आप कोई एक खास प्रोफेशन अपने लिए चुने क्योंकि अगर एक बार आपने अपना प्रोफेशन चुन लिया तो आप हमेशा के लिए उसी से बंध कर रह जायेंगे

WORLDWIDENOVEL